E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 02-10-2024
Accepted: 09-11-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 108-109

डॉ. मेज़र सिंह चट्ठा जी की पंजाबी लोक संगीत को देन

रूपिन्द्र कौर

सह–आचार्य, संगीत विभाग, सी. एम. के. नैशनल पी. जी. महाविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15102936

Corresponding Author: रूपिन्द्र कौर

सारांश

डॉ. मेजर सिंह पंजाबी लोक संगीत के एक महान गायक, वादक और नृत्यकार हैं। वे तुँबी, अलगोजा, डफ और बीन जैसे पारंपरिक लोक वाद्यों के विशेषज्ञ हैं और नरेंद्र बीबा, गुरमीत बावा जैसे प्रमुख कलाकारों के साथ मंच पर प्रदर्शन कर चुके हैं। उनका करियर कई दशकों तक फैला हुआ है और उन्होंने पंजाबी लोक संगीत और नृत्य को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. सिंह ने कई पंजाबी एलबमों में संगीत रिकॉर्ड किया और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रमुख महोत्सवों में प्रदर्शन किया। लोक संगीत और नृत्य के प्रति उनकी निष्ठा के कारण उन्हें 2020 में पंजाब राज्य शिरोमणि पुरस्कार सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुए। इसके साथ ही वे अकाल डिग्री मस्तुयाना साहिब कॉलेज, संगरूर में इतिहास के सह–आचार्य के रूप में 25 वर्षों से अधिक समय तक सेवा दे चुके हैं। उनका योगदान भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आगामी पीढ़ियों के कलाकारों के लिए प्रेरणास्त्रोत बना हुआ है।

मूल शब्दः पंजाबी लोक संगीत, डॉ. मेजर सिंह, तुँबी, अलगोजा, लोक वाद्य, लोक नृत्य, पंजाबी लोक गायक, पारंपरिक संगीत का संरक्षण, अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन, सांस्कृतिक महोत्सव, पुरस्कार, पंजाब राज्य शिरोमणि पुरस्कार।

प्रस्तावना

डॉ. मेजर सिंह, पंजाबी लोक संगीत के महान गायक, वादक व नृत्क हैं। वह लोक गीतों के गायक एवं पंजाब के लोक अर्थात् लोक वाद्यों जैसे तुम्बी, अलगोज़ा, सप्प, डफ, बग्दू, बीन आदि वाद्यों के वादक है। उन्होंने नरेन्द्र बीबा, गुरमीत बावा के साथ बोलियाँ भी डाली है तथा उन कलाकारों के साथ अलगोजे बजाकर, मिर्ज़ा, हीर–राँझा, पंजाबी लोक साजों के साथ मंच प्रदर्शन भी किया है। इस महान शख्सीयत ने प्राचीन बोलियों, गाथाओं का काफी संग्रह कर रखा है। उनके पास से कोई भी पुरानी लोकगाथा, किस्से प्राप्त किए जा सकते हैं। इनका जन्म 24 अगस्त, 1966 गाँव चट्ठा सेखवां में पिता जोगिन्द्र सिंह एवं माता गुरदियाल कौर के घर हुआ, यह तीन भाईयों में से बीच वाले हैं। उनके दादा जी का नाम चंद सिंह व दादी जी का नाम चन्द कौर था। इनके पिता का व्यवसाय खेती था। माता घरेलू महिला थी। बचपन से ही मेजर सिंह पढ़ाई के साथ–साथ खेती का कार्य भी करते थे। मेजर सिंह संस्कार से युक्त प्रतिमूर्ति हैं, समाज में वह बहुत ही संस्कारी मनुष्य के रूप जाने जाते हैं। उनके अनुसार उन्हें अपने माता–पिता द्वारा परवरिश में जो संस्कार मिले हुए हैं वह जीवन पर्यन्त उनके साथ हैं। वह हिस्ट्री के सह–आचार्य के रूप में संगरूर जिले के अकाल डिग्री मस्तुयाना साहिब कॉलेज में कार्यरत रहे। वहाँ वे 25 सालों से सेवारत हैं। वह गायन, वादन एवं नृत्य तीनों लोक शैलियों के मार्तण्ड व्यक्तित्व हैं। सर्वप्रथम मलवयी गिद्धा जिसे मर्दों का गिद्धा कहते हैं। उनके गाँव के कलाकारों ने इनको बाल्यकाल (लगभग 10 वर्ष) की आयु से जोड़ा, जब नृत्य शैली का स्टेजीकरण 1976 में सोनाम शहर में हुआ। उस पेशकारी के समय जितनी बोलियाँ थी, सभी का गायन मेजर सिंह जी ने किया और साथ में अलगोज़े का वादन सतपाल शर्मा (जो सरकारी अध्यापक थे) ने किया। सतपाल शर्मा जी से प्रभावित होकर मेजर सिंह जी ने अलगोज़े सीखना प्रारम्भ किया तथा बाद में अलगोज़े के महान वादक बने। कई पंजाबी एलबमों में कई कलाकारों जैसे हरभजन मान, बलकार सिद्धू, नरेन्द्र बीबा, गुरमीत बावा के गीतों में अलगोज़े, तुँबी वाद्य उनके रिकॉर्ड में बजाए। इन्होंने हडिप्पा (रानी मुखर्जी, शाहिदकपूर की मूवी) फिल्म में भी वाद्य रिकॉर्ड करवाएँ हैं। इन्होंने 1999 से लेकर 2020 तक कई अवॉर्ड प्राप्त किए, जिनमें मुख्य अवॉर्डस की सूची इस प्रकार है–

1. शहीद–ए–आज़म, सरदार भगत सिंह, स्टेट यूथ अवॉर्ड (1990)
2. प्रशंसा अवॉर्ड (1999), डिप्टी कमीश्नर, संगरूर द्वारा दिया गया।
3. सुरजीत बिन्द्रखिया अवॉर्ड (2003), गायन क्षेत्र में दिया जाने वाला अवॉर्ड है।
4. विरासत अवॉर्ड (2003)
5. राष्ट्रीय युवा महोत्सव में एप्रीसियेशन अवॉर्ड, (2010)

उप–कुलपति (जिस अवॉर्ड की आयु 25 वर्ष पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, भंगड़ा, गिद्धा, लोक वादयों के वादक के रूप में कलाकार) सीमा 35 वर्ष तक है।
6. प्रशंसा अवॉर्ड (2011), दविन्द्र शोरी (मैम्बर ऑफ पटियाला भेंट, फलेमीरी, कनाडा)
7. प्रशंसा अवॉर्ड (2020)
8. पंजाबी स्टेट शिरोमनी अवॉर्ड (2020), लोक गायन, नृत्य एवं वादन में विशेष योगदान के लिए, पंजाब सरकार द्वारा।

कलाकार के रूप में इन्होंने फाइन टॉन कम्पनी के लिए कई गीत रिकार्ड किए जिनमें नाग एलबम के नाग गीत, मिर्ज़ा, हीर–राँझा, पंजाब, लोकतथ्य आदि प्रमुख हैं।
'ऑनली फॉक' कैसेट में सरबजीत चीमा, पम्मी बाई एवं मेजर सिंह द्वारा गाई गई कई साँझी बोलियाँ रिकॉर्ड हैं–

आ गई मेलन विच गिद्धे दे, लम्मी (लम्बी) मार उडारी,
परियाँ वरगा रूप नार दा, मघदी ज्यों अंग्यारी,
दोनों नैन कटारां वरगे
विच सुरमें दी धारी, यौवन महक रिहा
ज्यों केसर दी क्यारी।।
हीर दी खातर मर गिया राँझा
छाड़िया तख्व हज़ारा, सोहनी ने महीवाल पट्टिया,
बैतल ने बनज़ारा,
खू गड़ेदा मर दिया मजनू, सी लैला नू प्यारा,
मेरी मन पतलो मिन्नता करे कुँवारा।

यह इनकी प्रसिद्ध बोलियाँ थी, यह साँझा रिकॉर्ड बहुत प्रसिद्ध हुआ।
मुछाफुट्ट गबरू कैंठिया वाले, मावाँ दुध मक्खना नाल पाले!! यह भी इनकी एक प्रसिद्ध बोली थी।
इनका 'सोहनी महीवाल' गीत जो 2024 में रिकॉर्ड हुआ, बहुत खूबसूरत ढंग से गाया है (जिसमें सोहनी महीवाल किस्से को विशेष ढंग से गाने का प्रयत्न किया है)। 'इकतारा वजदा' गीत ईश्वर स्तुति का प्रतीक है, मनुष्य को मोह–माया से बचने का उपदेश इस गीत में समाहित है।
इनका एक अन्य गीत 'साडे पंजे दरिया जे इक होवन' फेसबुक पर बहुत प्रसिद्ध हुआ, जिसके 2 मिलियन व्यूज़ हैं एवं हज़ारों लाइक हैं। इस गीत में इन्होंने चढ़दा पंजाब–लहन्दा पंजाब को एक हो जाने का सपना व्यक्त किया है। इन्होंने इण्डियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशनंस (आइ.सी.सी.आर.) की तरफ से 60 देशों में प्रदर्शन किया, पंजाब सरकार के सभ्याचारक मामले विभाग, टयूरिज्म विभाग एवं व्यक्तिगत तौर पर 12 देशों में मंच प्रदर्शन किया। मुख्य फेस्टिवल्ज़ जिनमें इन्होंने मंच प्रदर्शन किया, वह इस प्रकार है–
1. इन्टरनेशनल, डे–लेमर ;क्म.संउमतद्ध फेस्टीवल मॉरीशियंस (1987)
2. इन्टरनेशनल फेस्टीवल, (1990) (जर्मन), वर्ड–एक्सयो (1992), स्पेन
3. इन्टरनेशनल फेस्टीवल, लुधियाना (1993)
4. इन्टरनेशनल फेस्टीवल, वर्ड इकोनोमिक्स फॉर्म (स्विज़रलैण्ड), 1995
5. इन्टरनेशनल फेस्टीवल, ग्रांड अवॉर्ड सीन पार्क (अक्तुबर 1995– जनवरी 1996)
6. इन्टरनेशनल शॉपिंग फेस्टीवल, दुबई (2001)
7. इन्टरनेशनल सिल्क रूट फेस्टीवल, सीरिया (2003)
8. इन्टरनेशनल सिल्क रूट फेस्टीवल, सीरिया (2008)
9. इन्टरनेशनल कल्चरल फेस्टीवल, रशिया (2009)
10. एसोसियशन ऑफ इण्डियन यूनीवर्सिटी की ओर से 2010 में बंगला देश में हुए एस.ए.यू.एफ.ई.एस.टी. (साउथ एशियन कंट्रीज़ यूनीवर्सिटीज़ फेस्टीवल) में भाग लिया, जिसमें मुख्य कलाकार के रूप में कार्य किया।
11. इन्टरनेशनल फेस्टीवल, अफ्रीका (2012)
12. इन्टरनेशनल कल्चरल फेस्टीवल, अल्जीरिया, एसपर (2015)

एन. जैड. सी. सी. (नॉर्थ जॉन कल्चरल सैंटर, पटियाला) की तरफ से भारत के सभी राज्यों में मंच प्रदर्शन किया। संगीत नाटक अकादमी दिल्ली की ओर से दिल्ली में मंच प्रर्दशन किया। पंजाबी अकादमी, दिल्ली की ओर से दिल्ली में भंगड़ा, गायन, वादन एवं नृत्य प्रदर्शन किया।
लोक गायन के साथ–साथ यह लोक नृत्य में लुड्डी, झूमर, भंगड़ा, मलवई गिद्धा में निपुण हैं। लोकवादन में अलगोज़ा, सप्प, काटो, बीन, बम्दू इत्यादि वाद्यों में भी निपुण हैं। पंजाब में इनके कई कलाकार इनके शिष्या रहे, वह शिष्य अब विदेशों में मलवई गिद्धे, फॉक ऑरकेस्ट्रा, भंगड़ा इत्यादि लोक शैलियों का प्रदर्शन करके अपनी अच्छी आजीविका अर्जित कर रहे हैं।

संदर्भ

1. चड़दी कला (समाचार पत्र), 25 अक्तुबर, 1977 'विश्व परिक्रमा कर चुका मेजर सिंह'
2. पंजाबी ट्रिब्यून चण्डीगढ़ (समाचार पत्र), 1 जून, 1992 'स्पेन के मेले में भंगड़ा की धूम'
3. अजीत जलंधर, 7 जून, 1992 'जब ढोल के डंगे पर मेमे नाची'
4. अजीत जलंधर, 11 अगस्त 1993 'अर्न्तराष्ट्रीय मेले में पंजाबी गभरू'
5. अजीत जलंधर, 15 फरवरी, 1995 'पंजाबी सभ्याचार टोली की ओर से यूरोपीय देशों में रंगारंग प्रोग्राम'
6. द ट्रिब्यून पंजाबी, 10 अगस्त, 1996 'चीन की सभ्याचारक यात्रा'
7. उड़ीया (समाचार पत्र), धरीत्री, उड़ीसा
8. देश सेवक, 4 मार्च 1998
9. हिमाचल संध्या, 1 सितम्बर, 1998
10. पंजाबी ट्रिब्यून, 1 सितम्बर, 1998
11. गुजराती (समाचार पत्र), 21 जून, 1999
12. द नेशन बैंगकॉक भंगरा, 1 फरवरी, 2002
13. जागरण सिटी (समाचार पत्र) भोपाल, 9 फरवरी, 2007
14. कनेडियन पंजाबी पोस्ट, 3 अगस्त, 2012
15. साक्षात्कार, डॉ० मेजर सिंह चट्ठा जी के साथ, दिनांक 22 जनवरी, 2024

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.